DHYEYA IAS
most trusted since 2003

DAILY pre PARE
Current affairs summary for prelims

19 January, 2024

जानवरों के आकार का ह्रास (कमी) और कोप का नियम

संदर्भ: *शोधकर्ताओं ने डायनासोर के छोटे छिपकलियों की तरह सिकुड़ने के रहस्य को सुलझाने का दावा किया है। जलवायु परिवर्तन के कारण जानवर अभी भी छोटे होते जा रहे हैं*

➢ **समय के साथ पशु का आकार बदलता है:**

- वर्तमान अनुसंधान कोप के नियम को चुनौती देता है, जो कई पशु समूहों में हजारों और लाखों वर्षों में बड़े शरीर के आकार विकसित करने की प्रवृत्ति की कल्पना करता है।
- शोध दौरान कोप के नियम के स्पष्ट अपवाद देखे गए, जैसे कि सरीसृप विशाल डायनासोर के आकार से हाथ के आकार के जेकॉस और गौरैया तक का सिमित हो जाना।

➢ **जानवरों के आकार के विकास को प्रभावित करने वाले कारक:**

- विभिन्न पारिस्थितिक और शारीरिक स्थितियों में विकास का अनुकरण करने वाले कंप्यूटर मॉडल के माध्यम से निम्नलिखित तीन परिदृश्यों की पहचान की गई:
  - प्रजातियों के बीच कम प्रतिस्पर्धा के कारण समय के साथ जानवरों का आकार बढ़ता है, खासकर जब भोजन प्रचुर मात्रा में होता है (उदाहरण के लिए, जुरासिक काल)।
  - कुछ जानवर बड़े होते जाते हैं और फिर विलुप्त हो जाते हैं, क्योंकि ये प्रतिस्पर्धा करते हैं लेकिन पर्यावरणीय आपदाओं के कारण प्रतिस्पर्धा से बाहर हो जाते हैं।
  - उच्च प्रतिस्पर्धा और आवास/संसाधन के अधिव्यापन की स्थितियों में, संसाधनों और प्रतिस्पर्धियों के वितरण के अनुसार अनुकूलन करते हुए, प्रजातियाँ समय के साथ छोटी होती जाती हैं।

➢ **जलवायु परिवर्तन और पशु आकार:**

- बदलती जलवायु के प्रति तेजी से अनुकूलन के कारण जानवरों के आकार में निरंतर कमी देखी गई है।
- अन्य प्रजातियों के बीच जैसे कि, ध्रुवीय भालू; निवास स्थान के विनाश और अधिक परिवर्तनीय तापमान वृद्धि की प्रतिक्रिया के कारण आकार में छोटे होते जा रहे हैं।
- पृथ्वी के गर्म होने पर प्राकृतिक चयन छोटे जानवरों को बढ़ावा देता है, जो हिमयुग के दौरान देखे गए ऐतिहासिक पैटर्न के विपरीत है।

➢ **जानवरों के आकार में बदलाव के ऐतिहासिक उदाहरण:**

- इन उदाहरणों में 24,000 से 14,500 वर्ष पहले अलास्का के घोड़ों का अकार लगभग 12% कम होना और डायनासोर एवं ऊनी (woolly) मैमथ का बढ़ना और फिर विलुप्त होना शामिल है।
- इस प्रकार के ऐतिहासिक पैटर्न जानवरों के आकार के विकास के भ्रामक मिश्रण को दर्शाते हैं, जिसमें कुछ वंशावलियां छोटी होती जा रही हैं, जबकि अन्य बढ़ रही हैं। ये पारिस्थितिक कारकों और प्रतिस्पर्धा से प्रभावित होती रहती हैं।

➢ **विलुप्ति और अस्तित्व के लिए निहितार्थ:**

- जानवरों के आकार का विकास विलुप्त होने की संवेदनशीलता को कैसे प्रभावित करता है, वर्तमान प्रसंग में यह चर्चा का विषय बना हुआ है।
- कम संख्या वाले जानवर विलुप्त होने के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं, जैसा कि डायनासोर के साथ देखा गया है।
- जलवायु परिवर्तन के कारण निवास स्थान में बदलाव के कारण जानवरों का आकार तेजी से घट रहा है, जो अंततः विलुप्त होने का कारण बन सकता है।

➢ **कोप का नियम:**

- **कोप नियम की उत्पत्ति:** इसका नाम अमेरिकी जीवाश्म विज्ञानी एडवर्ड ड्रिंकर कोप के नाम पर रखा गया, हालांकि उन्होंने विशेष रूप से इसका उल्लेख नहीं किया। कोप ने रैखिक विकासवादी पैटर्न की अवधारणा की वकालत की।
- **वैकल्पिक नाम:** इसे कोप-डिपेरेट नियम के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि चार्ल्स डेपेरेट ने स्पष्ट रूप से इस अवधारणा का समर्थन किया था। थियोडोर एडमर ने पहले इसकी वकालत की थी। "कोप का नियम" बर्नहार्ड रेन्श द्वारा कोप के लिए डेपेरेट की प्रशंसा के आधार पर गढ़ा गया था।

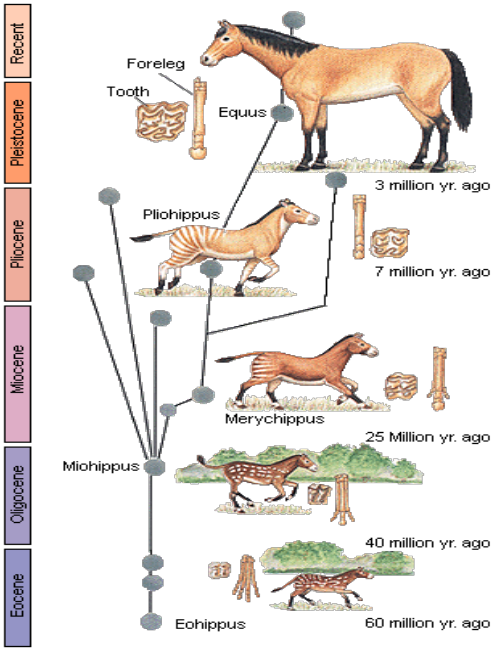

- **विकासवादी रुझान:** यह मानता है कि विकासवादी समय में वंशावली आम तौर पर शरीर के आकार के रूप में बढ़ती है, हालांकि कोप द्वारा इसे प्रत्यक्षतः परिभाषित नहीं किया गया है।
- **अपवाद और सीमाएँ:** कई मामलों में यह प्रदर्शित किया गया है, लेकिन यह सभी वर्गीकरण स्तरों या सभी वर्गों में पूर्णतः सत्य नहीं है। बड़े शरीर का आकार बढ़ी हुई फिटनेस से जुड़ा हुआ है, लेकिन इसके नुकसान भी हैं, जैसे कि इन समूहों के विलुप्त होने की संभावना अधिक होती है।
- **फिटनेस और विलुप्ति कारक:** शरीर का बड़ा आकार विभिन्न कारणों से बढ़ी हुई फिटनेस से जुड़ा हुआ है। हालाँकि, बड़े शरीर आकार वाले समूह के विलुप्त होने का खतरा अधिक हो सकता है, जो जीवों के अधिकतम आकार के लिए एक सीमित कारक के रूप में कार्य करता है।

जीएम फसलों का वाणिज्यिक विमोचन

संदर्भ: *उच्चतम न्यायालय ने आनुवंशिक रूप से संशोधित सरसों संस्करण, डीएमएच-11 को व्यावसायिक रूप से जारी करने के सरकार के फैसले को चुनौती देने वाली जनहित याचिकाओं (पीआईएल) पर अपने फैसले को रोक दिया है।*

➢ **सरकार का दृष्टिकोण:**

- जीएम फसलों, विशेष रूप से डीएमएच-11 के विरोध को सरकार द्वारा निराधार बताया गया है।
- इस प्रतिरोध को किसानों, उपभोक्ताओं और औद्योगिक हितों के लिए हानिकारक माना जाता है।

➢ **वर्तमान जीएम फसल एकीकरण:**

- भारत पहले से ही जीएम फसलों से उत्पादित तेल के आयात और उपभोग में शामिल रहा है, अतः ऐसी प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जोर दिया जा रहा है।
- सरकार कृषि में उभरती चुनौतियों से निपटने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में आनुवंशिक प्रौद्योगिकियों के महत्व बढ़ावा देना चाहती है।

➢ **आर्थिक प्रभाव:**

- जीएम फसलों की व्यावसायिक विमोचन (रिलीज) पर प्रतिबंध लगाना सार्वजनिक और राष्ट्रीय हितों के विरुद्ध माना जाता है।
- आंकड़े बताते हैं, कि भारत की खाद्य तेल की मांग का एक बड़ा हिस्सा आयात के माध्यम से पूरा किया जाता है, जो विदेशी निर्भरता के आर्थिक प्रभावों के साथ संरेखित है।

Face to Face Centres

DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029

dhyeyaias.com

- **जीएम सरसों (डीएमएच-11) के संभावित लाभ:**
  - डीएमएच-11 को प्रति हेक्टेयर उपज बढ़ाने की क्षमता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह घरेलू खाद्य तेल के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि में योगदान दे सकता है।
  - सरकार का दावा है कि आनुवंशिक संशोधन तकनीक कृषि चुनौतियों को नियंत्रित करने में अनिवार्य है, जिससे विदेशी आयात पर निर्भरता कम हो जाती है।
- **पर्यावरणीय चिंताओं को संबोधित करना:**
  - डीएमएच-11 के परीक्षण, विशिष्ट स्थानों पर नियंत्रित परिस्थितियों में भी उत्पादित किए जाने का स्पष्ट संकेत देते हैं।
  - सरकार जीएम प्रौद्योगिकियों के अनुसंधान, विकास और व्यावसायिक उपयोग को नियंत्रित करने वाले एक व्यापक वैधानिक ढांचे के अस्तित्व को रेखांकित करती है।
  - जीएम फसल परीक्षणों के लिए मौजूदा नियामक व्यवस्था में अब तक किसी भी पहचानी गई खामी को स्वीकार नहीं किया गया है।
- **आर्थिक और नियामक ढांचे का महत्व:**
  - सरकार खरपतवारों से फसल क्षति के कारण होने वाले आर्थिक नुकसान का हवाला देती है और इसके लिए प्रभावी खरपतवार नियंत्रण में जीएम फसलों के महत्व को रेखांकित करती है।
  - जीएम फसलों की शुरूआत को एक व्यापक वैधानिक योजना द्वारा समर्थित विशेषज्ञ राय और गहन परीक्षणों के आधार पर एक नीतिगत निर्णय के रूप में चित्रित किया गया है।
  - डीएमएच-11 के परीक्षण के संबंध में मौजूदा नियामक ढांचे या इसके कार्यान्वयन में किसी भी खामी की पहचान नहीं करने के लिए याचिकाकर्ताओं की आलोचना की गई है।
- **जीएम फसल:**
  - आनुवंशिक रूप से संशोधित (जीएम) फसलें, जिन्हें बायोटेक या आनुवंशिक रूप से इंजीनियर (जीई) फसलें भी कहा जाता है, विशिष्ट लक्षणों के लिए गैर-प्राकृतिक आनुवंशिक परिवर्तन से गुजरती हैं।
  - **आनुवंशिक संशोधन तकनीक:** पौधे के डीएनए में लक्षित परिवर्तन के लिए पुनः संयोजक डीएनए और जीन संपादन (जैसे, CRISPR-Cas9) जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है।
  - **जीएम फसलों के लक्षण:**
    - **कीट प्रतिरोध:** कुछ जीएम फसलें कीट-विषाक्त प्रोटीन का उत्पादन करती हैं, जैसे, बीटी कपास।
    - **शाकनाशी सहनशीलता**: कुछ जीएम फसलें विशिष्ट शाकनाशी सहन करती हैं, जिससे खरपतवार नियंत्रण में सहायता मिलती है।
    - **रोग प्रतिरोधक क्षमता:** आनुवंशिक संशोधन रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करके फसल के नुकसान को कम करता है।
    - **बेहतर पोषण:** "गोल्डन राइस" जैसी जीएम फसलें बढ़ी हुई पोषण सामग्री के लिए डिज़ाइन की गई हैं, जिसमें बीटा-कैरोटीन का स्तर ऊंचा होता है।

अनौपचारिक रोजगार और कम वेतन वाले काम के दुष्चक्रों को तोड़ना

संदर्भ: *अंतर्राष्ट्रीय नीति सलाहकार आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD) की एक नई रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया की अधिकांश नियोजित आबादी अनौपचारिक रोजगार में संलग्न हैं।*

- **अनौपचारिक रोजगार में बहुमत:** नई ओईसीडी रिपोर्ट इस बात पर प्रकाश डालती है कि दुनिया की अधिकांश नियोजित आबादी अनौपचारिक रोजगार से जुड़ी हुई है, जिससे उच्च गरीबी और व्यावसायिक जोखिम उत्पन्न होते हैं।
- **अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में कमज़ोरियाँ:** अनौपचारिक श्रमिकों के लिए पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा का अभाव, उन्हें और उनके परिवारों को विभिन्न जोखिमों के प्रति संवेदनशील बनाता है।
- **बच्चों पर प्रभाव:** जिन घरों में परिवार के सभी सदस्य अनौपचारिक रूप से काम करते हैं, उनमें बच्चों को कमजोरियाँ विरासत में मिलती हैं, जिससे चुनौतियों का एक दुष्चक्र बन जाता है।
- **अनौपचारिक घरेलू आँकड़े:** विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में 15 वर्ष से कम उम्र के लगभग 60% बच्चे पूरी तरह से अनौपचारिक घरों में रहते हैं, कुछ अफ्रीकी देशों में यह आंकड़ा 80% से भी अधिक है।
- **बच्चों को कमज़ोरियाँ विरासत में मिलने के चार पहचाने गए तरीके:**
  - पूरी तरह से अनौपचारिक घरों में प्रत्यक्ष अनौपचारिक रोजगार का होना।
  - पूरी तरह से अनौपचारिक, मिश्रित और औपचारिक परिवारों के बच्चों के बीच स्कूल में उपस्थिति का अंतर बढ़ता जाना।
  - सीमित वित्तीय संसाधन और माता-पिता का उनकी शिक्षा के लिए आवंटित समय का अपेक्षाकृत कम होना।
  - अनौपचारिक घरों के बच्चों के लिए स्कूल से काम की ओर स्थानान्तरण सहित इसमें अधिक अनिश्चित संक्रमण का पाया जाना।
- **औपचारिक नौकरी के अवसरों पर प्रभाव:** औपचारिक नौकरी पाने की संभावना न केवल व्यक्तिगत शिक्षा से बल्कि माता-पिता की शिक्षा और रोजगार से भी प्रभावित होती है। पूरी तरह से अनौपचारिक परिवारों के बच्चों के वयस्कों के रूप में काम करने की अधिक संभावना होती है।
- **स्कूल में उपस्थिति असमानताएँ:** पूरी तरह से अनौपचारिक परिवारों के बच्चों की स्कूल में उपस्थिति दर मिश्रित या पूरी तरह से औपचारिक परिवारों की तुलना में काफी कम है।
- **शैक्षिक व्यय में असमानताएँ:** औपचारिक परिवार अनौपचारिक परिवारों की तुलना में प्रति बच्चे की शिक्षा पर अधिक खर्च करते हैं, जिससे प्रारंभिक शैक्षिक असमानताएँ उत्पन्न होती हैं।
- **कोविड-19 संकट का प्रभाव:** मौजूदा शैक्षिक असमानताएं कोविड-19 संकट के कारण और बढ़ गई हैं, जिससे माता-पिता की संसाधन तक पहुंच सीमित हो गई है।
- **युवा लोगों के लिए नुकसान:** मिश्रित और पूरी तरह से औपचारिक परिवारों की तुलना में अनौपचारिक परिवारों के युवाओं की 'शिक्षा, रोजगार या प्रशिक्षण में नहीं' (एनईईटी) की हिस्सेदारी अधिक है।
- **अनौपचारिक शिक्षुता:** उप-सहारा अफ्रीका में, अनौपचारिक शिक्षुता का होना सामान्य बात है, जबकि विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में तीन-चौथाई से अधिक युवा अनौपचारिक क्षेत्र में ही अपना रोजगार शुरू करते हैं।
- **औपचारिक रोजगार में क्षेत्रीय असमानताएँ:** युवा श्रमिकों को यूरोप, मध्य एशिया और लैटिन अमेरिका में औपचारिक काम मिलने की बेहतर संभावना है, जबकि उप-सहारा अफ्रीकी देशों में 95% तक युवा श्रमिक अनौपचारिक रोजगार में हैं।
- **प्रस्तावित नीतियां:** वर्तमान OECD रिपोर्ट सुलभ गुणवत्ता वाली शिक्षा में निवेश करने, स्कूल छोड़ने वालों को रोकने और अनौपचारिक घरों के युवाओं के लिए स्कूल से काम की ओर संक्रमण को सुचारू बनाने जैसी नीतियों की सिफारिश करती है।
- **सहयोग की आवश्यकता:** प्रस्तावित नीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सरकारी एजेंसियों, शैक्षणिक संस्थानों, नियोक्ताओं और नागरिक समाजों के बीच सहयोग की आवश्यकता है।

Percentage of informal workers by earnings category

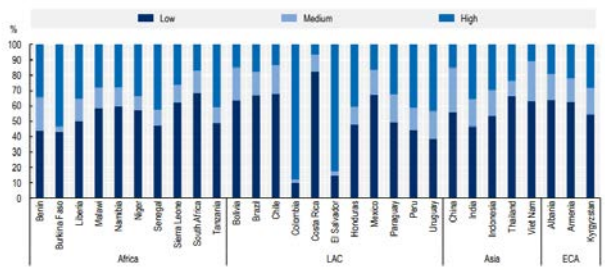

Note: Earnings categories are defined based on the total earnings distribution: low earnings are from the bottom of the distribution to 50% of the median earnings level; medium earnings are from 50% of the median to 150% of the median; and high earnings are 150% of the median and above. LAC – Latin America and the Caribbean; ECA – Europe and Central Asia; Bolivia – Plurinational State of Bolivia (hereafter Bolivia); China – People's Republic of China (hereafter China).
Source: Authors' calculations based on (OECD, 2021[3]), *Key Indicators of Informality based on Individuals and their Household (KIIbiH)* (database), https://www.oecd.org/dev/key-indicators-informality-individuals-household-kiibih.htm.

NEWS IN BETWEEN THE LINES

आर्थिक सहयोग और विकास संगठन

हाल ही में, अंतर्राष्ट्रीय नीति सलाहकार आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) ने बताया कि अनौपचारिक श्रमिकों द्वारा सामना किए जाने वाले जोखिम अब उनके बच्चों को प्रभावित कर रहे हैं।

आर्थिक सहयोग और विकास संगठन के बारे में:

- आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (ओईसीडी) एक अंतरसरकारी आर्थिक संगठन है।
- इसकी स्थापना 14 दिसंबर 1961 को 18 यूरोपीय देशों द्वारा वैश्विक व्यापार और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए की गई थी।
- इसका उद्देश्य आर्थिक विकास और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहित करना है।
- यह दुनिया भर में आर्थिक विकास के दृष्टिकोण पर आर्थिक रिपोर्ट, सांख्यिकीय डेटाबेस, विश्लेषण और पूर्वानुमान प्रकाशित करता है।
- यह उन देशों के लिए एक "ब्लैकलिस्ट" भी रखता है जिन्हें यह असहयोगी टैक्स हेवन मानता है।
- यह एक ऐसा मंच है जहां बाजार आधारित अर्थव्यवस्था वाले 38 लोकतंत्र सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए नीति मानकों को विकसित करने के लिए सहयोग करते हैं।
- इसकी उत्पत्ति 1948 में यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन (OEEC) के रूप में हुई थी और 1961 में इसका नाम बदलकर OECD कर दिया गया जब संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा व्यापक सदस्यता को प्रतिबिंबित करने के लिए इसमें शामिल हुए।
- इसका मुख्यालय पेरिस, फ्रांस में है।
- इसके महासचिव माथियास कॉर्मन हैं, जिन्हें 2021 में पांच साल के कार्यकाल के लिए नियुक्त किया गया था।

सामाजिक न्याय का क़ानून

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री सामाजिक न्याय की डॉ. बी.आर.अम्बेडकर की 125 फुट ऊंची प्रतिमा का विजयवाड़ा के स्वराज मैदान में अनावरण करेंगे।

सामाजिक न्याय की प्रतिमा के बारे में:

- सामाजिक न्याय की प्रतिमा, एक गैर-धार्मिक प्रतिमा है।
- यह एक 206 फुट ऊंची स्मारक है (81 फुट की चौकी पर खड़ी है) जो डॉ. बीआर अंबेडकर स्मृति वनम, आंध्र प्रदेश में स्थित है।
- यह भारत की दूसरी सबसे ऊंची और कुल मिलाकर चौथी सबसे ऊंची प्रतिमा है।
- "यह विशाल प्रतिमा भारत के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और लैंगिक परिदृश्य में डॉ. अंबेडकर के अपार योगदान को दर्शाती है।
- यह प्रतिमा कांस्य आवरण के साथ स्टील फ्रेम से बनी है जो पूरी तरह से भारत में निर्मित है।
- प्रतिमा के निर्माण में लगभग 400 मीट्रिक टन स्टेनलेस स्टील और 120 मीट्रिक टन कांस्य का उपयोग किया गया था।

सफ़ेद सोना

भरूच के पेट्रोकेमिकल औद्योगिक क्लस्टर ने क्षेत्र के प्रमुख कृषि उत्पाद पर इसके प्रतिकूल प्रभाव के कारण चिंताएं बढ़ा दी हैं।

सफ़ेद सोने के बारे में:

- कपास, भारत में एक अर्ध-जेरोफाइट और महत्वपूर्ण व्यावसायिक फसल है।
- भारत वैश्विक कपास उत्पादन में लगभग 25% का योगदान देता है।
- देश में इसके आर्थिक महत्व के कारण इसे अक्सर "व्हाइट-गोल्ड" कहा जाता है।
- भारत में लगभग 67% कपास की खेती वर्षा आधारित क्षेत्रों में की जाती है जबकि 33% कपास की खेती सिंचित क्षेत्रों में की जाती है।
- इसे अच्छी जल निकासी वाली गहरी जलोढ़ मिट्टी से लेकर काली चिकनी मिट्टी तक विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जाता है।
- भारत कपास की सभी चार प्रजातियों की खेती करने वाला एकमात्र देश है: गॉसिपियम आर्बोरियम, जी. हर्बेशियम, जी. बारबाडेंस और जी. हिर्सुटम।
- दस प्रमुख कपास उत्पादक राज्यों को तीन कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है: उत्तरी क्षेत्र (पंजाब, हरियाणा और राजस्थान), मध्य क्षेत्र (गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश) और दक्षिणी क्षेत्र (तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु) .
- सरसों और सोयाबीन के बाद बिनौला तेल भारत में तीसरा सबसे बड़ा घरेलू उत्पादित वनस्पति तेल है।
- बिनौला तेल का उपयोग खाना पकाने के लिए किया जाता है और बचा हुआ बिनौला केक पशुधन और मुर्गीपालन के लिए एक महत्वपूर्ण चारा सामग्री के रूप में उपयोग किया जाता है।

ह्यूमन पैपिलोमावायरस

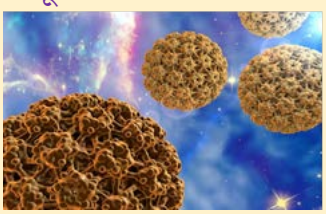

हाल ही में, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने खुलासा किया है कि सर्वाइकल कैंसर, भारत में महिलाओं में दूसरा सबसे आम कैंसर है, जो लगातार बने रहने वाले ह्यूमन पेपिलोमावायरस संक्रमण के कारण होता है।

ह्यूमन पैपिलोमावायरस:

- ह्यूमन पेपिलोमावायरस (एचपीवी) डीएनए वायरस का एक परिवार है जो उपकला को संक्रमित कर सकता है।
- यह संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे आम यौन संचारित संक्रमण (एसटीआई) है।
- यह आमतौर पर हानिरहित होता है और अपने आप ठीक हो जाता है लेकिन कुछ प्रकार से कैंसर या जननांग मस्से हो सकते हैं।
- यह वायरस से पीड़ित किसी व्यक्ति के साथ योनि, गुदा या मुख मैथुन के दौरान त्वचा से त्वचा के संपर्क के माध्यम से फैलता है।
- ऐसा अनुमान है कि हर साल लगभग 1.25 लाख महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर का पता चलता है और उनमें से लगभग 75,000 की मृत्यु हो जाती है।
- वैश्विक सर्वाइकल कैंसर से होने वाली मौतों में से लगभग 25% मौतें भारत में होती हैं।
- 2022 में, WHO ने वैश्विक स्तर पर सर्वाइकल कैंसर को खत्म करने के लिए एक रणनीति अपनाई।
- रणनीति में यह सुनिश्चित करना शामिल है कि 2030 तक 90% लड़कियों को एचपीवी टीका पूरी तरह से लगाया जाए।
- भारत में दो टीके, गार्डासिल और सेरवावैक उपलब्ध हैं।

सुर्खियों में स्थल

बांग्लादेश

हाल ही में, ताइवान की सत्तारूढ़ डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी के लाई चिंग-ते ने राष्ट्रपति चुनाव जीता है और स्वतंत्रता समर्थक रुख के साथ डीपीपी की लगातार तीसरी जीत दर्ज की है।

ताइवान (राजधानी: ताइपे)

अवस्थिति: ताइवान, आधिकारिक तौर पर चीन गणराज्य, पूर्वी एशिया में पूर्व और दक्षिण चीन सागर के जंक्शन पर स्थित एक देश है।

राजनीतिक सीमाएँ: इसकी सीमा पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी), जापान और फिलीपींस के साथ लगती है।

तटीय सीमाएँ: यह फिलीपीन सागर (पूर्व), पूर्वी चीन सागर (उत्तर), लूजॉन जलडमरूमध्य (दक्षिण) और दक्षिण चीन सागर (दक्षिण पश्चिम) सहित जल निकायों से घिरा हुआ है।

भौतिक विशेषताएं:

- सबसे ऊंची चोटी, यू शान, 3,952 मीटर ऊंची है, जो ताइवान को दुनिया के सबसे ऊंचे द्वीपों में से एक बनाती है।
- ताइवान की सबसे लंबी नदी चो-शुई (झुओशुई) नदी है, जो 116 मील लंबी है।
- दक्षिण में काओ-पिंग (गाओपिंग) नदी में सबसे बड़ा जल निकासी बेसिन है

POINTS TO PONDER

- इंडिया इनोवेशन सेंटर फॉर ग्राफीन (IICG) की स्थापना करने वाले संयुक्त उद्यम में कौन से संगठन शामिल हैं? **- इलेक्ट्रॉनिक्स टेक्नोलॉजी के लिए सामग्री केंद्र (सी-एमईटी), टाटा स्टील लिमिटेड और केरल की डिजिटल यूनिवर्सिटी**
- राष्ट्रीय क्वांटम मिशन (एनक्यूएम) के कार्यान्वयन के लिए कौन सी संस्था जिम्मेदार है? **- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी)**
- IFSC-GIFT सिटी के सहयोग से ग्लोबल हाइड्रोजन ट्रेडिंग मार्केट (GHTM) कहाँ स्थापित करने की योजना है? **- गांधीनगर, गुजरात**
- इम्फाल और इरिल नदियों के संगम से बनी नदी का क्या नाम है? **- मणिपुर नदी**
- गुरुवायुर मंदिर को बनाने के लिए किस सामग्री का उपयोग किया गया है, जिसे दक्षिण मंदिर के द्वारका के रूप में भी जाना जाता है, जहां भारत के प्रधान मंत्री ने हाल ही में दौरा किया था? **- पाताल अंजना पत्थर**